Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, DEC-JAN, 2020, VOL- 8/37

सेवारत व असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

घनश्याम शर्मा[1], Ph. D. & उर्मिला शर्मा[2]

[1]प्राचार्य महर्षि दाधीत शि.प्र. महाविद्यालय केशवपुरा कोटा

[2]प्राध्यापक, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इन्दौर

Abstract

वर्तमान अर्थोपार्जन के युग में जहॉ नारी अपने बच्चो को छोड कर अर्थोपार्जन में लगी है वही उनके बच्चो के पालन पोषण मे आने वाली समस्याओ से उनका सामना होता है।सेवारत व असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक विकास के विभिन्न क्षेत्रो मे आने वाली समस्याओ का अध्ययन किया गया गया। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से हम यह निष्कर्षपर पहुचे है। कि सेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक विकास मे समायोजन की समस्या सबसे अधिक होती है। वह सभी क्षेत्रो मे असेवारत माताओ के बच्चो के लगभग समान होते है लंकिन समायोजन मे दोनो मे बहुत ही अन्तर पाया जाता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति का साधन है।शिक्षा केवल सीखना नही वरन मस्तिष्क की शक्तियो का अभ्यास व विकास है। कहा गया है कि स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। मनुष्य के शरीर मे मस्तिष्क का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यदि मस्तिष्क स्वस्थ नहोतोकोई भी कार्य ठीक प्रकार से नही होता है और सदा मानसिक उलझन रहती है। मानसिक उलझन के कारण ही व्यक्ति समाज मे अपने को समायोजित नही कर पाता है मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम मे धनिष्ठ सम्बन्ध है।

बदलते हुए सामाजिक परिवेश में महिलाए पुरूषो की तुलना में किसी प्रकार से किसी भी क्षेत्र में कम नही है। भारतीय संविधान द्वारा पुरूषो के समान ही महिलाओ को भी समान अधिकार दिये गये है।आज के व्यवसायिक युग में महिलाओ ने भी अपने आप को गृहिणी के दायित्व तक सीमित नही रख कर अपनी शिक्षा कार्यकुशलता तथा क्षमताओ के उपयोग के प्रति जागरूकता आयी है ऐसीपरिस्थिति में कामकाजी महिलाए जो घर व बाहर भी काम के बोझ से लदी रहती है दिन भर के ऑफिस के काम के बाद जब शाम को घर लोटते ही माताए घर के अन्य कामो मे व्यस्त हो जाती है वे अपने बच्चो को समय देने मे कठिनाई महसूस करती है जिससे बाल मन पर नकारात्मक प्रभाव पडता है ।

शब्दकुंजी

सेवारत माताओ,असेवारत माताओ, मानसिक स्वास्थ्य,संवेगात्मक,बुद्वि,सुरक्षा, असुरक्षा स्वप्रत्यय आदि।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ

स्वास्थ्य देश के लिये महत्वपूर्ण है विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार रोग या दुर्बलता का उपचार शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक एंव सामाजिक तरिको से आसानी से किया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य को परिभाषित करते हुए यह कहा जा सकता है। कि इससे एक व्यक्ति को अपनी क्षमताओ का पता चलता है और यह आत्म विश्वास आत है कि वे जीवन के तनाव के साथ सामना कर सकते है। उत्पादकता और अपने या अपने समुदाय के लिये एक योगदान करने में सक्षम हो सकते है इस सकातातमक अर्थ मे यह भी माना जा सकता है कि विभिन्न दुविधाओ से लडकर व जीत कर मानसिक रू‍प से स्वस्थ व्यक्ति अच्छी तरह से किसी भी काय को कर सकते है अतः यह प्रभावी संचालन के लिये आवश्यक है मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्र जैसे संवेगात्मक स्थिरता, समायोजन, सुरक्षा और असुरक्षा, स्वप्रत्यय, आदि क्षेत्रो पर प्रभाव को देख जा सकता है।

प्रायः यह देखने मे आता है कि जिन बच्चो की माताए घर पर रहती है वे अपने बच्चो कि प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान देती है। जिससे वे बच्चे चिन्ता मुक्त रहते और वे स्वंय को अधिक सुरक्षित महसूस करते है और प्रत्येक कार्य पूर्ण दक्षता से करते है। इसके विपरित सेवारत माताओ के बच्चे अपनी माँ से समय नही मिलने के कारण अपने आप को असुरक्षित व अकेला महसूस करते है। जिससे उनका व्यवहार प्रभावित होता है और वे मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाते है। ऐसी परिस्थिति में महिलाओ द्वारा समाजिक भूमिकाओ के निर्वहन के साथ मातृ भूमिका निर्वहन स्वरूप दोहरी भूमिका उनके बालको के विकास को प्रभावित करती है।

समस्या कथन

सेवारत व असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्र जैसे संवेगात्मक स्थिरता, समायोजन, सुरक्षा और असुरक्षा, स्वप्रत्यय, तुलनात्मक अध्ययन करना।

उदेश्य

1. सेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना
2. असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना
3. सेवारत व असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना

परिकल्पना

1. सेवारत व असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओ में कोई सार्थक सम्बन्ध नही होता है

न्यादर्श

किसी भी अनुसंधान की विश्वसनीयता व असफलता न्यादर्श पर ही आधारित होती है अतःशोध अध्ययन को व्यापक व गहन बनाने के लिये अधोलिखित आधार पर न्यादर्श का चयन किया गया है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उदयपुर शहर के 13 से 15 वर्ष तक के 80 विद्यार्थीयो का चयन किया गया है 40 सेवारत माताओ के बच्चो तथा40 असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य का अध्यन करना।

परिसीमन

1. प्रस्तुत समस्या का परिसीमन उदयपुर शहर तक ही रख गया है।
2. प्रस्तुत समस्या मे 13 से 15 वर्ष तक के छात्र छात्राओ का चयन किया गया है।
3. इस अध्ययन में छात्र छात्राओ दानो को ही शामिल किया गया है।

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि

उपकरण

विद्यार्थीयो के मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन हेतु अरूण कुमार सिह अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित स्वास्थ्य बेटरी का प्रयाग किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण व परिणाम :–

1. सेवारत माताओ के बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्रो पर प्रभाव

कस	क्षेत्र	कथन	मध्यमान	मानक विचलन
1	संवेगात्मक सिथरता	15	8.06500	2.7253
2	समायोजन	40	25.2750	5.5587
3	स्वायत्ता	15	10.3250	2.5825
4	सुरक्षा और असुरक्षा	15	8.5250	2.5493
5	स्वप्रत्यय	15	8.3000	2.4515
6	बुद्धि	30	23.4500	3.2322
	Total	130	84.4750	10.4374

सवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य के प्रथम संवेगात्मक स्थिरता पर 40 छात्रो की 15 कथना पर राय ली गयी जिसका माध्यमान व विचलन तालिका के अनुसार रहा समायोजन क्षेत्र की तुलना में इस क्षेत्र पर सेवारत माताओ के बच्चो पर कम प्रभाव होता है।

तलिका के अनुसार द्वितीय क्षेत्र समायोजन के मध्यमान व मानक विचलन देखने के बाद यह कहा जा सकता है कि बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य के समायोजन पर माता के कामकाजी होने का अधिक प्रभाव पडता है।

इसके तृतीय क्षेत्र स्वायत्तता पर ली गयी राय के आधार पर कहा जा सकता है कि सेवारत माताओ के मानसिक स्वास्थ्य समायोजन से कम प्रभाव पडता है।

मानसिक स्वास्थ्य के सुरक्षा और असुरक्षा 40 छात्रो से 15 कथनो पर राय ली गयी जिसका विश्लेषण करने पर यह कहा जा सकता है कि समायोजन कि तुलना मे इस क्षेत्र पर भी कम प्रभाव पडता है।

स्वप्रत्यय पर भी राय लेने पर यह तथ्य सामने आया है कि सेवारत माताओ के बच्चो पर इस क्षेत्र में भी कम प्रभाव देखा जा सकता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मनसिक स्वास्थ्य के बुद्वि क्षेत्र का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि बुद्वि पर अन्य क्षेत्रो की अपेक्षा अधिक प्रभाव पडता है लेकिन समायोजन कि तुलना मे कम प्रभाव देखा जा सकता है

2. असेवारत माताओ के बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्रो पर प्रभाव

कस	क्षेत्र	कथन	मध्यमान	मानक विचलन
1	संवेगात्मक सिथरता	15	10.3250	1.9285
2	समायोजन	40	27.1250	5.4184
3	स्वायत्ता	15	10.5250	1.4997
4	सुरक्षा और असुरक्षा	15	9.5500	1.7599
5	स्वप्रत्यय	15	9.5750	2.0843
6	बुद्धि	30	18.6500	3.7653
	Total	130	85.4750	10.0523

असेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य के प्रथम संवेगात्मक स्थिरता पर 40 छात्रो की 15 कथना पर राय ली गयी जिसका माध्यमान व विचलन तालिका के अनुसार रहा समायोजन क्षेत्र की तुलना में इस क्षेत्र पर असेवारत माताओ के बच्चो पर कम प्रभाव होता है

तलिका के अनुसार द्वितीय क्षेत्र समायोजन के मध्यमान व मानक विचलन देखने के बाद यह कहा जा सकता है कि बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य के समायोजन पर माता के असेवारत होने का अधिक प्रभाव पडता है। असेवारत माताओ के बच्चो का समायोजन स्तर अधिक अच्छा होता है

इसकेतृतीय क्षेत्र स्वायत्तता पर ली गयी राय के आधार पर कहा जा सकता है कि असेवारत माताओ बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य समायोजन से कम प्रभाव पडता है

मानसिक स्वास्थ्य के सुरक्षा और असुरक्षा 40 छात्रो से 15 कथनो पर राय ली गयी जिसका विश्लेषण करने पर यह कहा जा सकता है कि समायोजन कि तुलना मे इस क्षेत्र पर भी कम प्रभाव पडता है

स्वप्रत्यय पर भी राय लेने पर यह तथ्य सामने आया है कि असेवारत माताओ के बच्चो पर इस क्षेत्र में भी कम प्रभाव देखा जा सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य के बुद्वि क्षेत्र का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि बुद्वि पर अन्य क्षेत्रो की अपेक्षा अधिक प्रभाव पडता है। लेकिन समायोजन कि तुलना मे कम प्रभाव देखा जा सकता है

निष्कर्ष

सेवारत माताओ के बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य में संवेगात्मक स्थिरता, समायोजन, स्वायतता, स्वप्रत्यय, सुरक्षा, असुरक्षा तथा बुद्धि के विषय में जानकारी प्राप्त होगी जिससे वे अपने मानसिक स्वस्थ्य को संन्तुलित रखते हुए कार्य करने में सक्षम होगें जिससे वे लक्ष्य को जल्दी से प्राप्त कर सकेगें की तुलना में समायोजन क्षेत्र में कम होता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ :–

पाठक पी.डी (1974) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ : विनोद पुस्तक मन्दिर
शर्मा सुभाष (2004)भारतीय शिक्षा व्यवस्था अवधारणा समस्याए एंव सम्भावना : वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
डॉ पारीख आशा बाल विकास एंव पारिवारिक सम्बन्ध : कॉलेज बुक डिपो प्रकाशन
तिवारी गोविन्द (1989) शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार : विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
पी एसनायडु (1992) शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व प्रथम संस्करण : विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
वर्मा, जी.एस. (2005) शैक्षिक तकनीकी : लॉयल बुक डिपो, मेरठ
अस्थाना विपिन (2010–2011) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी : अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
सिंह रामपाल (2013) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी : अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
सिंह,रीना,गुप्ता डी. के.(2010) उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण
दक्षता का अध्ययन।
कुमार सुरेन्द्र (2010) प्राथमिक स्तर पर नियमित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की
शिक्षण दक्षता का अध्ययनः शिक्षा शास्त्र विभाग इलाहाबाद।
बाबूलाल (2011) बालक अभिभावकों संबधों का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि
पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
डी.एन श्रीवास्तव (2009) अनुसंधान विधियाँ : आगरा साहित्य प्रकाशन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies